B.A Part-2

U.G.

Sub.- Hindi Hons.( Hindi **Composition -100marks)**

**Topic -दिनकर जी की राष्ट्रीय चेतना** -डॉ०प्रफुल्ल कुमार

आजादी ही अमृत तत्व है। सम्पूर्ण प्राणी जगत को स्वतंत्रता सबसे अधिक प्रिय है।

आज हमारा स्वतंत्र भारत आजादी के 75 वें साल में आजादी का जो अमृत महोत्सव मना रहा है,उस अमृत को प्राप्त करने में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की भूमिका सर्वोपरि है।दिनकर ने राष्ट्रीय-चेतना से सराबोर अनेक कविताओं की रचना की है।राष्ट्रीय-चेतना का तात्पर्य है राष्ट्र के प्रति सम्यक दृष्टिकोण से चिंतन करना।राष्ट्र का अर्थ मानव-समाज है।सामाजिक जीवन का गौरवपूर्ण इतिहास है।समाज के लिए सामाजिकों ने कुछ मूल्य,कुछ ऐसे संविधान तय कर रखा है,जिसके अनुपालन से किसी भी नागरिक को जीवन-जापन में किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता है और वह यथासंभव सर्वांगीण विकास करने मे समर्थ होता है।संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मानव मूल्यों-स्वाभिमान,आत्मविश्वास, आत्मगौरव,स्वाधीनता,समानता की रक्षा,मानव-जीवन की पीड़ा,पीड़ा के कारण एवं निदान के उपाय,सम्पूर्ण राष्ट्रीय एकता,अभिन्नता,अखण्डता,सर्वांगीण विकास की भावनाओं की अभिव्यक्ति ही राष्ट्रीय चेतना है।

 दिनकरजी ने देश की स्वतंत्रता एवं रक्षा के साथ देशप्रेम की व्यापक फलक पर व्याप्त विभिन्न पहलुओं पर सकारात्मक विचारों एवं भावनाओं से ओत-प्रोत हिमालय , हूंकार,परशुराम की प्रतीक्षा,कुरुक्षेत्र आदि रचनाऐं रची हैं।इन काव्यों में इनकी राष्ट्रीयता संपूर्णता के साथ अभिव्यक्ति पायी है।रामधारी सिंह दिनकर जैसे सूर्य का शौर्य ही है,जिसने परतंत्र भारतीय खगवृंदों को स्वतंत्रता की प्रथम रश्मि का एहसास दिलाने का सफल यत्न किया था।इन्हें स्वच्छंद गगन में उड़ान भरने की प्रेरणा दी थी।इनके पंखों में ऐसी फड़कन भरी कि पिंजरे की तिल्लियाँ टूट-टूट कर बिखरने लगी और ये देश दुनिया में स्वतंत्र, स्वाभिमान पूर्वक विचरने लगे।उन्होंने स्वयं को अपने समय का सूर्य कहा है।अपने देश में ऐसा नवविहान लानेवाला साहित्यकार कहा है जिसकी रचनाओं की शक्ति से सम्पूर्ण विश्व में मंगलमय वातावरण बन जायेगा।जिसकी रश्मियों के प्रभाव से मानव-जीवन की पीड़ा भष्म हो जायेगी।राष्ट्रीय चेतना के जगते ही विसंगतियों,अभावों,कमजोरियों से निपटने की शक्ति बढ़ जायेगी।मानव जीवन पौरुष पूंज बनकर सुखद वातावरण में जीवन व्यतीत करेगा।

 इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को ही उभारा है। उनका जीवन दर्शन अपनी अनुभूति और अपने विवेक से अनुप्राणित है।जनवादी, मानवतावादी ,प्रगतिवादी विचारों के साथ वे अपनी रचनाओं में उपस्थित मिलते हैं।गांधीवादी और अहिंसा के पुजारी होते हुए भी कुरुक्षेत्र में उन्होंने धिक्कार स्पष्ट किया है और आत्मबल को महत्व दिया है।दिनकर की शैली मैं प्रसाद गुण,ओजस्वी स्वर और अनुभूति की तीव्रता है।सच्ची संवेदना और प्रवाह है।उनके चिंतन में अपने ही विस्तृत विचार और भाव दिखाई देता है। अभिव्यक्ति की तीव्रता है।गरीमामयी गंगा तट पर गेहूँ के साथ गुलाब का,शौर्य के साथ शौन्दर्य का वैभव द्रष्टव्य है।दिनकर परतंत्र भारत के उस कालखण्ड की उपज थे,जिसमें स्वाभाविक है कि कोई भी मातृभूमि से प्रेम करने वाला साहित्यकार राष्ट्रीय चेतना से अछूता नहीं रह सकता था।दिनकर स्वयं जिस क्षेत्र(सिमरिया,बिहार) से संबंध रखते हैं,वहाँ ओज और शौर्य स्वभाविक रूप से चरित्र में शामिल हो जाता है।उस मातृभूमि की मिट्टी का यह गुण है कि उग्र, क्रांतिकारी स्वर रचनाओं में आ जाना स्वाभाविक है।यही कारण है कि कुरुक्षेत्र में मूलत: महाभारत का विषय वस्तु होते हुए भी राष्ट्रीय चेतना से संयुक्त मातृभूमि के प्रति स्नेह भरी पंक्तियाँ मिल जाती हैं।मानवता का मूल मंत्र अपनी मातृभूमि की सेवा करना है। इन्होंने देशप्रेम और राष्ट्रीय भावनाओं की ऐसी लहर फैला दी,जिससे आजादी प्राप्त करने के लिए देश के बच्चे-बूढ़े,जवान सभी हथियार उठा लिये।आत्म बलिदानियों की फौज खड़ी हो गई और मातृभूमि आजाद हुई।दिनकरजी ने अघिकार और कर्तव्य के लिए जन-जन को सचेत किया है-“छीनता हो स्वत्व कोई,और तू त्याग-तप से काम ले यह पाप है।/ पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो।”**1** इस प्रकार की अनेक पंक्तियों में मानव मन में आत्मविश्वास और स्वभिमान जगाकर अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए तैयार हो जाने की प्रेरणा भरी है।

राष्ट्र की सेवा केवल राष्ट्र को शत्रुओं से बचाव ही नहीं है।समाज में शांति-व्यवस्था बहाल करना भी जरूरी है।इसके लिए सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक समानता का होना अनिवार्य है। भ्रष्टाचार,अशांति,आतंकवाद फैलाने वाले तत्वों पर विचार करना होगा।उन कारणों को दूर करने की जरूरत है,जिससे समाज में सभी सुख नहीं पाते हैं। दिनकर जी की पंक्तियाँ आज भी प्रासंगिक हो गई है,जब यूक्रेन और रसिया सशक्त आयुद्धों के बल पर तृतीय विश्वयुद्ध को निमंत्रण दे रहे हैं।विश्व शांति के मूल मंत्र का अनुशरण नहीं कर रहे हैं।दिनकर जी ने बताया है-“शान्ति नहीं तब तक,जब तक सुख भाग न नर का सम हो,/नहीं किसी को बहुत अधिक हो,नहीं किसी को कम हो।”**2**

और यह शान्ति स्थापित करने वाले घटक किसी एक व्यक्ति के प्रयास से पूरे नहीं हो सकते हैं। जब सभी लोग मिलकर एक साथ लगातार प्रयास करेंगे,तभी यह शांति बहाल हो सकेगी।अर्थात सामूहिक प्रयास के लिए सभी को जागरूक करने की जरूरत है।

 “शान्ति-बीन तब तक बजती है नहीं सुनिश्चित सुर में,/स्वर की शुद्ध प्रतिध्वनि जब तक उठे नहीं उर-उर में।”3 युद्ध किसी एक पक्ष से नहीं होता है।असमानता के कारण युद्ध होता है।किसी का कुछ लूटा जाता है ।दो योद्धाओं के युद्ध में जिम्मेदार कौन है?इसपर उन्होंने कहा-“पापी कौन मनुज से उसका न्याय चुराने वाला,या कि न्याय खोजते विघ्न का सीस उड़ाने वाला?” **4**

युद्ध और शांति के अन्तरद्वन्द्वों से मुक्त होकर मनुष्य क्या करें,इसका मार्गदर्शन करते हुए कवि ने बताया है-“सबसे बड़ा धर्म है नर का सदा प्रज्वलित रहना,/दाहक शक्ति समेट स्पर्श भी नहीं किसी का सहना।”**5**

 निकट भविष्य में धर्म का,शान्ति का साम्राज्य स्थापित नहीं होता देखा कवि चितिंत है- “धर्म का दीपक,दया का दीप,कब जलेगा,कब जलेगा/विश्व में भगवान?कब सुकोमल ज्योति से अभिसक्त हो,/सरस होंगे जली-सूखी रसा के प्राण?/है बहुत बरसी धरित्री पर अमृत की धार,/पर नहीं अब तक सुशीतल हो सका संसार।/भोग-लिप्सा आज भी लहरा रही उद्धाम,बह रही असहाय नर की भावना निष्काम।”**6**

 उन्होंने औद्योगिक विकास की ओर आकर्षित मानव को सचेत किया था।आज पूरा विश्व वैज्ञानिक आविष्कारों का दुरुपयोग कर मानव-जीवन के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। चाहे वह वैश्विक तापमान में भीषण वृद्धि हो,कोविड 19 जैसी लाइलाज वैश्विक महामारी हो अथवा तीसरे विश्वयुद्ध की आशंका।विश्व-पर्यावरण की समस्या अथवा व्यक्ति-व्यक्ति के बीच वैमनस्यता विज्ञान के सदुपयोग नहीं होने के कारण ही है। दिनकर ने कहा था-“रसवती भू के मनुज का श्रेय,यह नहीं विज्ञान,/विद्या-बुद्धि यह आग्नेय;/विश्व-दाहक,मृत्यु-वाहक,सृष्टि का संताप,/भ्रान्त पथ पर-बढ़ते ज्ञान का अभिशाप।”**7** यदि विज्ञान हमारे जीवन के लिए उपयोगी से अधिक हानिकारक है तो हमें विवेक से काम लेना चाहिए।हमें या तो इसका सही उपयोग करना चाहिए।इसका मनुष्य के विकास का संसाधन जुटाने में सावधानी पूर्वक उपयोग किया जाना चाहिए।जीवन रक्षक दवाइयों के निर्माण, यातायात के संसाधन,भोजन, वस्त्र,आवास जुटाने में विज्ञान का सहयोग लेना चाहिए।मानव आत्म रक्षक आयुधों का विवेक से उपयोग करे। यदि ऐसा नहीं कर विज्ञान से हानि हो रही हो तब विज्ञान के प्रति मोह -माया त्याग कर उसका त्याग कर दी जाय।

 यह भी कि“सावधान,मनुष्य!यदि विज्ञान है तलवार,/तो इसे दे फेंक तज कर मोह स्मृति के पार।”8

मानव तुम कर्मशील,वीर योद्धा बनो। हमें राष्ट्र से प्रेम है। हम राष्ट्र भक्त हैं। हमारी मातृभूमि सदा स्वतंत्र रहेगी। ऐसी धारणाएं मात्र रखने से हम राष्ट्र भक्त नहीं हो जाते हैं। इसके लिए तो हमें अपने पौरुष का सदुपयोग करना पड़ेगा। हमें कर्मवीर होना होगा। हम मातृभूमि की सेवा करने के लिए तत्पर रहें। मजबूती के साथ वीर योद्धा की तरह हमेशा अपनी मातृभूमि की सेवा में लगे रहे ।तभी हम देश भक्त हो सकते हैं। हमारी राष्ट्रीय चेतना तभी सार्थक हो सकती है। क्योंकि -“मही नहीं जीवित है मिट्टी से डरने वालों से,/जीवित है वह उसे फूंक सोना करने वालों से।/ज्वलित देख पंचाग्नि जगत् से निकल भागता योगी।/धुनि बनाकर उसे तापता अनासक्त रसभोगी।”9

जब तक मनुज-मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा,/शमित न होगा कोलाहल,संघर्ष नहीं कम होगा।”10

मनुष्य संसार के सारे जीवों में सबसे अधिक सशक्त प्राणी है।मनुष्य को सृष्टि की सर्वोत्तम रचना कहा गया है। दिनकर मानव-बल का सदुपयोग करने के लिए प्रेरित किया है। वस्तुतः मानव अपनी शक्ति को समझ ले। उसका सही प्रयोग करे तो निश्चय ही कठिन से कठिन कार्यों को सहज ही पूर्ण कर सकता है।संसार में कोई भी काम नहीं है,जिसे मनुष्य नहीं कर सकता है। दिनकर ने कहा भी है कि जब मनुष्य सच्ची लगन और उत्साह के साथ मनोयोगपूर्वक अपनी शक्ति का उपयोग भरपूर करता है तब पत्थर भी पानी हो जाता है। निश्चय ही संसार में सब कुछ किया जा सकता है-“सब हो सकते तुष्ट,/एक-सा सब सुख पा सकते हैं,/चाहे तो,पल में धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।”11

 मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।व्यक्ति समाज का आधार है,ईकाई है और समाज के बिना उसका जीवन खतरे में है।इसलिए व्यक्ति को ऐसा व्यवहार करते रहने की जरुरत है जिससे कि समाज में सभी सुखी रह सकें।समाज से ही राष्ट्र का निर्माण हुआ है।समाज में सभी को सुखी बनाना ही राष्ट्र सेवा है परन्तु यह लोकहितकारी कार्य इतना आसान नहीं है इस लिए दिनकर जी ने बताया है कि व्यष्टि के सुख में ही समष्टि का सुख निहित है सभी लोग स्वयं को सुखी बनावेंगे तो सारा समाज और राष्ट्र सुखी हो जायेगा-“दुर्लभ नहीं मनुज के हित,निज वैयक्तिक सुख पाना,/किन्तु कठिन है कोटि-कोटि मनुजों को सुखी बनाना।/एक पंथ है छोड़ जगत को अपने में रम जाओ,/खोजो अपनी मुक्ति और निज को ही सुखी बनाओ।×××× जिस तप से तुम चाह रहे पाना केवल निज सुख को,कर सकता है दूर/वही तप अमिऐ नरों के दुख को।”**12**

कवि ने पारिवारिक जीवन को उत्तम बताया है,वैराग्य को महत्व नहीं दिया है।मोक्षदायिनी मृत्यु में कोई शांतिपूर्ण वातावरण नहीं है। -“ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य है,कुछ भी नहीं गगन में,/धर्मराज! जो कुछ है,वह है मिट्टी में जीवन में।”**13** इसलिए वैराग्य छोड़ कर-“भोगो तुम इस भाँति मृत्ति को,दाग नहीं लग पाये,/मिट्टी में तुम नहीं,वही तुममें विलीन हो जाये।”**14** इस सांसारिक जीवन में ही सुख और दुख संभव है।सनातन धर्म में इस बात पर बल दिया गया है कि देवताओं को भी सुख-दुःख की अनुभूति इसी संसार में होती है यही कारण है कि बार-राम-कृष्ण,बुद्ध के रूप में अवतरित हुए हैं। इसलिए परलौकिक सुख की कल्पना में भटकते रहना व्यर्थ है।इसी संसार को सुखी और शांतिपूर्ण बनाने की आवश्यकता है।इस संसार में ही सामाजिक,आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाकर सामुदायिक विकास की ओर सामाजिक कार्यकर्ताओं और सरकार को ध्यान देना चाहिए।

 दिनकर में बचपन से ही राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी थी।इतिहास और साहित्य के ज्ञान ने उन्हें उपनिवेशवाद और सामंतवाद के गठबंधन के विरुद्ध खड़ा होने पर मज़बूर कर दिया।उनके उग्र विचारों में राष्ट्रीय चेतना संपन्न कवि का रूप उभारने में तत्कालीन परिवेश और पृष्ठभूमि का बहुत बड़ा योगदान था।स्वतंत्रता आंदोलन के समय गाँधी और मार्क्स के विचारों के द्वन्द में दिनकर उलझे हुए थे।एक ओर गाँधी जी की अहिंसक नीति और सत्याग्रह था तो दूसरी ओर चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह के क्रांति कारी विचार थे।अहिंसक सत्याग्रह की राजनीति युवाओं की आस्था हिलाने लगी थी। दिनकर ने हिमालय कविता में कहा- युधिष्ठिर को मत रोको,उनको स्वर्ग जाने दो परनु हमें शक्ति सम्पन्न आयुधों-गाण्डीव गदा,युक्त अर्जुन,भीम जैसे वीरों को लौटा दिया जाय।

 दिनकर की राष्ट्रीय भावना और उग्र होती चली गई।अँगरेजों के अत्याचार और युद्ध की परिणति ने दिनकर को विचलित कर दिया तब उन्होंने युद्ध के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा करते हुए कुरुक्षेत्र जैसा ग्रन्थ लिखा।इसमें उनकी आत्म संघर्ष की पूर्ण परिणति दिखाई देती है।उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध की विभिषिका भी देखी थी।उनके सामने महात्मा गाँधी का सत्य और अहिंसा पर आधारित स्वाधीनता आंदोलन था जिससे प्रभावित होकर एक वैचारिक द्वन्द उठ खड़ा हुआ।वे सोचने लगे अत्याचार और अन्याय का विरोध अहिंसा से करना ठीक है या कृष्ण के हिंसामूलक युद्ध की नीति उचित है। दिनकर उपनिवेशवाद के कारण कठोर थे तो मानवतावादी होने के नाते संवेदनशील भी।भारत- विभाजन (1947)के समय दिनकर ने देशवासियों की आत्मा का पूरा दर्द अपने काव्य के माध्यम से व्यक्त किया कि जिस देश की परतंत्रता पुरी तरह से अभी समाप्त भी नहीं हुई है और उसे बाँटने के लिए बेहयाई से लोग तैयार हो रहे हैं।दूसरी ओर यह भी कहा कि आज़ादी देश के लिए नया सूर्योदय है जिसे भारत की जनता ने प्राप्त किया है। सदियों की की गुलामी की जंजीरें तोड़कर जनता अपना शासन स्वयं करने के लिए आ रही है उनके लिए राजसिंहासन खाली करो।इनकी कविताओं में विद्रोह,विस्फोट के साथ जीवन की निर्बाध गति है,जीवन के संघर्षों का सौन्दर्य है।विपथगा कविता में सामाजिक विषमता और अव्यवस्था के प्रति बगावत करते हुए कहते हैं-एक ओर सम्पन्न लोग कुत्तों को दूध-वस्त्र देते हैं,दूसरी ओर निर्धन बच्चे भूखे अकुलाते हैं।ये बच्चे क्षीणकाय माँ की हड्डी से चिपक,ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं।उन्होंने रूढ़ियों का डटकर विरोध किया।दलितों,शोषितों पर हो रहे अत्याचारों के ख़िलाफ़ जमकर आवाज़ उठाई।रश्मिरथी में कर्ण के जरिए जाति व्यवस्था से उत्पन्न अनेक विसंगतियों और सामाजिक कुरीतियों पर प्रश्न खड़े किए हैं।भारत पर हुए चीनी आक्रमण(1962) में उनका एक बार फिर पौरुष हुंकार उठा।उन्होंने इस आक्रमण को अपनी स्वतंत्रता पर ही संकट करार दिया और देश की रक्षा के लिए जन-जन को ललकारा।दिनकर के राष्ट्रीय चिंतन की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति उनकी संस्कृति के चार अध्याय में मिलती है।दिनकर स्वतंत्रता-पूर्व आज़ादी के लिए चिंतन करते रहे और स्वतंत्रता के पश्चात् देश की जनता की आवाज़ बन उनके सुख-दुख की चिंता करते रहे।वे सांसद भी रहे और दिल्ली के विलासपूर्ण जीवन और गाँवों की बदहाली पर भी कलम चलाए।वे देश और जनता की सुख-दुख से अंजान बने नेताओं और बुद्धिजीवियों को आगाह करने से भी नहीं चुकते थे।आजाद देश की बदहाली के लिए जिम्मेदार सरकार और राजनेताओं को फटकार लगाई और गुनाहगार कहा।उनकी चेतना में यह बात बैठ गई थी कि जबतक हमारे देश के सभी नागरिकों की बुनियादी सुविधाऐं उपलब्ध नहीं हो जाती है तब तक हमारे देश को पुरी आजादी नहीं मिलेगी।हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी भेद-भाव के समाज की मुख्य धारा से जुड़कर समानता का एहसास नहीं कर लेता है तब-तक हमारी आजादी की लड़ाई जारी रहेगी।-समर शेष है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जीवन भर करोड़ों लोगों की आवाज बनकर देश में गूंजते रहे। दिनकर के चले जाने से वह कंठ मौन हो गया जिसने अपने गर्व भरे स्वरों में घोषित किया था-सुनूँ क्या सिंधु मैं गर्जन तुम्हारा/स्वयं युग धर्म का हुंकार हूँ मैं।

शाम धेनी सामाजिक चिंतन के अनुरूप लिखी गई है।संस्कृति के चार अध्याय में दिनकर जी ने सांस्कृतिक भाषाई और क्षेत्रीय विभिन्नताओं के बावजूद भारत की एकता का संदेश दिया है।इनकी रचनाओं की प्रखरता को देखते हुए नामवर सिंह ने कहा है कि दिनकर जी अपने युग के सचमुच सूर्य थे।राजेंद्र यादव ने उनकी रचनाओं का प्रभाव स्वीकार किया है।आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार दिनकर जी अपने समय के कवियों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय थे।इस प्रकार दिनकर जी की काव्य प्रतिभा पर कई समालोचकों ने सम्मानजनक बात कही है।इनकी कुरुक्षेत्र रचना के लिए काशीनागरी प्रचारिणी सभा सम्मान मिला।संस्कृति के चार अध्याय के लिए साहित्य अकादमी सम्मान मिला।